देहरादून, बुधवार
8 अप्रैल 2020
गढ़वाल संस्करण
मूल्य ₹ 5.00
पृष्ठ 12

दैनिक जागरण

www.jagran.com

उत्तराखंड, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और पश्चिम बंगाल से प्रकाशित

वाट्सऐप पर एक समय में एक ही मैसेज फारवर्ड होगा 10

देश को एक लाख की राहत देगा सुनील गावस्कर का हर शतक 10

ग्रामीण जनजीवन में रचा-बसा है लॉकडाउन

जागरण विशेष

शैलेंद्र गोदियाल • उत्तरकाशी

कोरोना के कहर से बचाव के लिए पूरे देश में लॉकडाउन है। परंतु, गांव में जनजीवन पहले की तरह ही संचालित है। इसीलिए तो कहते हैं गांव में आज भी एक अलग दुनिया बसती है। जो लॉकडाउन के नियमों का पालन सदियों से करती आ रही है। गांव में भौतिक और आधुनिक सुख सुविधाओं की कमियां जरूर हैं। लेकिन, इस मामले में गांव शहरों से ज्यादा अनुशासित नजर आ रहे हैं। जंगलों से चारा लाने से लेकर खेतों में जुताई-बुआई और तैयार मटर की तुड़वाई चल रही है।

लॉकडाउन में शहरों की हलचल सुबह सात बजे से दोपहर एक बजे (लॉकडाउन की छूट) के बीच होती हैं। इसके बाद शहर में भीड़ गायब नजर आ रही है और सड़कों पर सन्नाटा रहता है। सीमांत जनपद उत्तरकाशी की बात करें तो लॉकडाउन से ग्रामीण जन जीवन पर बहुत असर नहीं हुआ है। कोरोना

उत्तरकाशी के डुंडा ब्लॉक के ओल्था गांव में तैयार हुई मटर की फसल तोड़ते हुए काश्तकार मदन मोहन भट्ट • साभार- कमलेश गुरूरानी

संक्रमण को लेकर गांव में शारीरिक दूरी को लेकर ग्रामीण जागरूक हुए हैं। भटवाड़ी ब्लॉक के बोंगाडी के प्रधान विजेंद्र गुसांई कहते हैं कि गांव में पहले भी अनुशासित जीवन था और आज भी अनुशासित जीवन है। शहरों में सुबह के समय लॉकडाउन छूट पर जो भगदड़ होती है। गांव उससे हमेशा दूर रहा है उनके गांव में इन दिनों ग्रामीण शारीरिक दूरी का पालन करते हुए जंगलों से घास लाना, खेतों में धान, झंगोरा, मंडवा की बुआई करना आदि हैं। उत्तकाशी जनपद के ग्रामीण किसानों के साथ काम कर रहे रिलायंस फाउंडेशन के कमलेश गुरुरानी कहते हैं कि ग्रामीण जीवन अनुशासन का दूसरा नाम है। यहां ग्रामीण भाग-दौड़ में नहीं लगे रहते हैं।

लॉकडाउन जैसे नियमों का हमेशा यहां पालन होता है। गांव की सबसे खूबसूरत बात तो यह है कि गांव के लोग मेहनती, सरल स्वभाव, स्वभाव से निश्छल और स्वाभिमानी होते हैं। इन दिनों सिर्फ इन ग्रामीण काश्तकारों को उनके उत्पादित मटर व अन्य उत्पादों को मंडियों व उपभोक्ताओं तक पहुंचाने की जरूरत है।